OPEN ACCESS

Volume: 4

Issue: 1

Month: March

Year: 2025

ISSN: 2583-7117

Published: 31.03.2025

Citation:

डॉ. उमा शर्मा "**महिला सशक्तिकरण में शिक्षा और रोजगार की भूमिका: एक नीतिगत परिप्रेक्ष्य**" International Journal of Innovations in Science Engineering and Management, vol. 4, no. 1, 2025, pp. 384–391.

DOI:

10.69968/ijisem.2025v4i1384-391

This work is licensed under a Creative Commons Attribution-Share Alike 4.0 International License

महिला सशक्तिकरण में शिक्षा और रोजगार की भूमिका: एक नीतिगत परिप्रेक्ष्य

डॉ. उमा शर्मा[1]

[1]संकाय सदस्य, राजनीति विज्ञान एवं लोक प्रशासन अध्ययनशाला, विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन, मध्य प्रदेश

सारांश

यह अध्ययन "महिला सशक्तिकरण में शिक्षा और रोजगार की भूमिका: एक नीतिगत परिप्रेक्ष्य" के अंतर्गत महिला सशक्तिकरण के लिए शिक्षा और रोजगार की महत्वपूर्ण भूमिका का विश्लेषण करता है। महिला शिक्षा और रोजगार की बढ़ती भागीदारी ने महिला सशक्तिकरण की दिशा में महत्वपूर्ण बदलाव लाए हैं। सरकार द्वारा लागू की गई योजनाएं जैसे "बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ", "मुद्रा योजना" और स्टैंड-अप इंडिया" महिलाओं को शिक्षा और रोजगार के क्षेत्र में समान अवसर प्रदान करने में सहायक सिद्ध हुई हैं। अध्ययन में यह भी दिखाया गया है कि शिक्षा ने महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाया है, और रोजगार नीतियों ने उनके आर्थिक सशक्तिकरण में सहायक भूमिका निभाई है। इस अध्ययन ने यह प्रदर्शित किया है कि नीति-निर्माण के प्रभावी प्रयासों से महिला सशक्तिकरण में अभूतपूर्व सुधार हुआ है। इस शोध ने महिला शिक्षा और रोजगार के समन्वय से महिलाओं के जीवन में सकारात्मक बदलाव और समाज में समानता की दिशा में हुए परिवर्तनों की जानकारी दी है।

कीवर्ड: महिला सशक्तिकरण, शिक्षा, रोजगार, नीतिगत हस्तक्षेप, सरकारी योजनाएँ, सामाजिक परिवर्तन, महिला उद्यमिता, स्व-रोजगार, महिला भागीदारी।

परिचय

महिला सशक्तिकरण 21वीं सदी में वैश्विक और राष्ट्रीय विकास के केंद्रीय बिंदुओं में से एक बन चुका है। भारत जैसे विकासशील देश में महिलाओं की स्थिति सामाजिक-सांस्कृतिक रूढ़ियों, आर्थिक संसाधनों की असमानता, तथा शिक्षा एवं रोजगार में सीमित भागीदारी के कारण जटिल बनी हुई है। हालांकि पिछले कुछ दशकों में सरकार द्वारा अनेक योजनाएँ चलाई गई हैं - जैसे कि बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ, प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना, महिला उद्यमिता मंच, इत्यादि - इनका वास्तविक प्रभाव विविध क्षेत्रों में अलग-अलग स्तर पर देखने को मिलता है। (Shrivastav, 2018)

राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (NFHS-5, 2019-21) के अनुसार भारत में केवल 71.5% महिलाएँ साक्षर हैं जबकि पुरुषों में यह दर 84.4% है।

वहीं, महिला श्रम बल सहभागिता दर (LFPR) 2022-23 में मात्र 37% थी (PLFS रिपोर्ट, MoSPI)। इस परिप्रेक्ष्य में यह आवश्यक हो जाता है कि शिक्षा और रोजगार जैसे दो महत्वपूर्ण आयामों की भूमिका महिला सशक्तिकरण में नीति आधारित दृष्टिकोण से समझी जाए।

समस्या का प्रस्तुतीकरण

भारत में महिला सशक्तिकरण के लिए कई प्रयास किए गए हैं, लेकिन वास्तविक स्थिति अभी भी पूरी तरह से संतोषजनक नहीं है और इसमें कई तरह के विरोधाभास भी देखने को मिलते हैं। एक ओर शहरी और शिक्षित वर्ग की महिलाओं ने नई ऊँचाइयाँ प्राप्त की हैं, वहीं ग्रामीण, वंचित और पिछड़े वर्ग की महिलाएँ आज भी साक्षरता और आजीविका की मूलभूत आवश्यकताओं से जूझ रही हैं (कुमारी, 2019)। शिक्षा प्राप्त महिलाएँ निर्णय लेने, अधिकारों के प्रति जागरूकता और आर्थिक आत्मनिर्भरता में अपेक्षाकृत अधिक सक्षम होती हैं। परंतु यह स्पष्ट नहीं है कि इन दोनों कारकों - शिक्षा और रोजगार - का सम्मिलित प्रभाव सशक्तिकरण के नीति आधारित निष्कर्षों में कैसे परिलक्षित होता है।

अध्ययन की आवश्यकता

हालिया नीति दस्तावेजों और रिपोर्टों में महिलाओं के समावेशी विकास की बात तो की गई है, परंतु उनका प्रभाव समग्र रूप से नहीं आँका गया है। विशेष रूप से शिक्षा और रोजगार के जरिये महिला सशक्तिकरण की असली स्थिति को नीतिगत ढांचे के भीतर विश्लेषण करने की जरूरत है।

- भारत सरकार द्वारा "राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020" तथा "महिला नीति मसौदा 2021" में महिला-केन्द्रित उपायों का उल्लेख है, परंतु इनके दीर्घकालिक प्रभावों की वस्तुनिष्ठ समीक्षा कम की गई है।
- नीति आयोग के SDG इंडिया इंडेक्स (2023) में लैंगिक समानता स्कोर में अधिकांश राज्यों का प्रदर्शन औसत से कम है।

इसलिए इस अध्ययन की आवश्यकता है कि इन दोनों कारकों की भूमिका को द्वितीयक आँकड़ों व सरकारी रिपोर्टों के माध्यम से परखा जाए।

शोध की विधि

यह शोध अध्ययन वर्णनात्मक और विश्लेषणात्मक प्रकार का है, जो पूरी तरह से द्वितीयक स्रोतों पर आधारित है। इसमें कोई भी प्राथमिक जानकारी, जैसे साक्षात्कार या प्रत्यक्ष सर्वेक्षण, शामिल नहीं की गई है। इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य शिक्षा और रोजगार के जरिए महिलाओं के सशक्तिकरण की वर्तमान स्थिति का मूल्यांकन करना और यह जांचना है कि वर्तमान सरकारी नीतियाँ कितनी प्रभावशाली साबित हो रही हैं। अध्ययन के लिए NFHS-5, PLFS, SDG Index, आर्थिक सर्वेक्षण, महिला एवं बाल विकास मंत्रालय की रिपोर्टें, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, UNDP, वर्ल्ड बैंक व UN Women जैसे विश्वसनीय स्रोतों से आँकड़े संकलित किए गए हैं। इन आँकड़ों का विश्लेषण वर्णनात्मक, तुलनात्मक, प्रवृत्ति आधारित तथा नीति मूल्यांकन के माध्यम से किया गया है, जिससे समयानुकूल परिवर्तनों, क्षेत्रीय भिन्नताओं और योजनाओं की व्यावहारिकता को समझा जा सके। यद्यपि यह अध्ययन प्रामाणिक द्वितीयक स्रोतों पर आधारित है, फिर भी इसमें प्राथमिक अनुभवों की अनुपस्थिति, स्थानीय स्तर पर सीमित पहुँच और

अद्यतन आंकड़ों की उपलब्धता जैसे कुछ शोधात्मक सीमाएं विद्यमान हैं।

महिला सशक्तिकरण की अवधारणा

महिला सशक्तिकरण का मतलब केवल महिलाओं को शक्ति या अधिकार देना नहीं है, बल्कि उन्हें सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और वैचारिक दृष्टि से स्वतंत्र और आत्मनिर्भर बनाना भी है (Jaysawal & Saha, 2023)। यह प्रक्रिया महिलाओं को अपने जीवन से जुड़े निर्णय स्वयं लेने, संसाधनों तक समान पहुँच प्राप्त करने और सामाजिक बाधाओं को पार कर आत्म-सम्मान के साथ जीने का अवसर प्रदान करती है। संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (UNDP) के अनुसार, सशक्तिकरण तब होता है जब महिलाएँ अपने जीवन की दिशा तय करने वाले विकल्पों को पहचानने, चुनने और लागू करने में सक्षम होती हैं। भारत में यह अवधारणा 1990 के दशक के बाद विशेष रूप से प्रबल हुई, जब पंचायती राज व्यवस्था में महिलाओं के लिए 33% आरक्षण लागू किया गया।

सशक्तिकरण के सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक आयाम

(क) सामाजिक आयाम

इसमें महिलाओं की शिक्षा, स्वास्थ्य, सामाजिक स्थिति, विवाह की आयु, लैंगिक समानता, तथा पारिवारिक निर्णयों में भागीदारी जैसे पक्ष आते हैं (Kamau, 2021)। उदाहरण के लिए, NFHS-5 (2019-21) के अनुसार, भारत में 15-49 वर्ष की केवल 42% महिलाएँ ही अपने स्वास्थ्य संबंधी निर्णय स्वयं ले पाती हैं।

(ख) आर्थिक आयाम

इसमें महिलाओं की श्रम भागीदारी, आय पर नियंत्रण, स्व-रोजगार की संभावनाएँ और वित्तीय समावेशन जैसे महत्वपूर्ण पहलू शामिल हैं। PLFS 2022-23 की रिपोर्ट के अनुसार, भारत में ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं की श्रम भागीदारी दर 41.5% है, जबकि शहरी क्षेत्रों में यह दर केवल 25.4% है।

Figure 1 https://www.standupmitra.in/

(ग) राजनीतिक आयाम

इसमें महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी, पंचायती राज में उपस्थिति, प्रतिनिधित्व, और नीति-निर्माण में सहभागिता आती है (Jannah, 2020) । 2023 तक भारत में ग्राम पंचायतों में करीब 14 लाख महिला प्रतिनिधि निर्वाचित थीं, जो विश्व में सबसे अधिक हैं।

तालिका 1 महिला सशक्तिकरण के प्रमुख आयाम एवं भारत में वर्तमान स्थिति

आयाम	सूचकांक	आँकड़े)2023 तक(	स्रोत
सामाजिक	महिला साक्षरता दर	71.5%	NFHS-5
आर्थिक	महिला श्रम भागीदारी दर (15+ आयु वर्ग)	ग्रामीण: 41.5%, शहरी: 25.4%	PLFS 2022-23
राजनीतिक	पंचायती राज में महिला प्रतिनिधित्व	14 लाख+	Ministry of Panchayati Raj

शिक्षा एवं रोजगार का महिला सशक्तिकरण से संबंध

शिक्षा और रोजगार दोनों ही महिला सशक्तिकरण की नींव माने जाते हैं। शिक्षा न केवल महिलाओं को ज्ञान प्रदान करती है, बल्कि उनमें आत्मविश्वास, निर्णय लेने की क्षमता और आत्मरक्षा जैसे महत्वपूर्ण गुण भी विकसित करती है। शिक्षित महिलाएं अपने जीवन पर बेहतर नियंत्रण रखती हैं, जिससे वे सामाजिक रूढ़ियों और लिंग आधारित असमानताओं का सामना करने में सक्षम होती हैं। (शुक्ला, 2019)

रोजगार महिलाओं को आर्थिक स्वतंत्रता देता है, जिससे वे परिवार, समाज और राष्ट्र के निर्णयों में सक्रिय रूप से भाग ले पाती हैं। भारत सरकार की 'महिला शक्ति केंद्र' योजना, 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' और 'स्टैंड-अप इंडिया' जैसी योजनाएं शिक्षा और स्वरोजगार के माध्यम से महिलाओं को सशक्त बनाने की दिशा में प्रभावी प्रयास कर रही हैं। (Nandesh, 2022)

तालिका 2 मध्य प्रदेश में महिला सशक्तिकरण के सामाजिक मानक (2014-2023)

सामाजिक संकेतक	परिवर्तन)2014-2023)	स्रोत
बाल विवाह की दर	32.4% से घटकर 23.1%	NFHS-4 (2015-16) और NFHS-5 (2019-21) रिपोर्ट्स
महिला स्व-रोजगार में वृद्धि	वर्ष 2020- में 21 65 लगभग.3% महिलाएँ स्व रोजगार-के क्षेत्र में सक्रिय	PLFS वार्षिक रिपोर्ट 2020-21
महिला बैंक खाते)PMJDY)	2025 तक 2.74 करोड़ से अधिक खाते	PMJDY राज्यवार आँकड़े, 2025
पंचायतों में महिला भागीदारी	50% आरक्षण के साथ सक्रिय भागीदारी	पंचायती राज मंत्रालय रिपोर्ट, 2023
घरेलू निर्णयों में महिला भागीदारी	2015-16 में 77.6% से बढ़कर 2020-21 में 87.2%	NFHS-4 और NFHS-5 रिपोर्ट्स
कन्या भ्रूण हत्या में सामाजिक अस्वीकृति	जागरूकता में वृद्धि, सामाजिक अस्वीकृति में सुधार	स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय रिपोर्ट्स

यह तालिका मध्य प्रदेश में महिला सशक्तिकरण से संबंधित सामाजिक संकेतों में हुए परिवर्तन को दर्शाती है। उदाहरण स्वरूप, बाल विवाह की दर में कमी, महिला स्व-रोजगार में वृद्धि और महिला बैंक खातों की संख्या में वृद्धि जैसी नीतिगत और सामाजिक परिवर्तन यह प्रमाणित करते हैं कि महिला सशक्तिकरण के लिए

किए गए प्रयासों का सकारात्मक प्रभाव पड़ा है। विशेष रूप से जनधन योजना के तहत महिला बैंक खातों की संख्या में 43% से बढ़कर 77% की वृद्धि दर्शाती है कि महिलाएं अब अधिक आर्थिक रूप से सशक्त हो रही हैं। इसके अलावा, पंचायतों में महिला भागीदारी और घरेलू निर्णयों में महिला की भागीदारी में भी बढ़ोतरी हुई है, जो सामाजिक परिवर्तन की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

आँकड़ा विश्लेषण

इस अनुभाग में मध्य प्रदेश में महिला सशक्तिकरण के परिप्रेक्ष्य में शिक्षा और रोजगार आधारित नीतियों के प्रभाव का विश्लेषण किया गया है। यह विश्लेषण मुख्य रूप से द्वितीयक आँकड़ों, विश्वसनीय रिपोर्टों, सरकारी दस्तावेजों, तथा केस स्टडी आधारित उदाहरणों पर आधारित है। यहाँ तीन उपविभागों में विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है, जिनमें नीति के जमीनी प्रभाव, सफल महिला शिक्षित उद्यमियों की कहानियाँ, तथा सामाजिक परिवर्तन के सूचक संकेतों का विवरण तालिकाओं व चार्ट के माध्यम से किया गया है। यह अनुभाग यह सिद्ध करने का प्रयास करता है कि यदि शिक्षा और रोजगार संबंधित योजनाओं को समन्वित और संरचित रूप से लागू किया जाए, तो वे महिला सशक्तिकरण के लिए अत्यंत प्रभावी सिद्ध हो सकती हैं।

नीति का प्रभाव

भारत सरकार द्वारा महिला सशक्तिकरण के लिए चलाई जा रही नीतियों और कार्यक्रमों का जमीनी प्रभाव भिन्न-भिन्न राज्यों और सामाजिक वर्गों में अलग-अलग रूप में सामने आता है। नीचे दो प्रमुख नीतियों का केस स्टडी आधारित विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है:

बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ (हरियाणा राज्य)

हरियाणा में 2015 में 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' (BBBP) योजना का क्रियान्वयन एक मिशन मोड में किया गया। यहाँ पहले लिंगानुपात 1000 पुरुषों पर 871 कन्याएँ था, जो 2020 में बढ़कर 923 तक पहुँच गया (स्रोत: NITI Aayog, 2021)।

तालिका 3

सूचकांक	योजना से पूर्व)2014)	योजना के बाद)2020)	स्रोत
बाल लिंगानुपात)0-6 वर्ष(	871	923	नीति आयोग रिपोर्ट, 2021
कन्या नामांकन दर कक्षा)1-5)	72%	88%	MHRD, School Data, 2020
किशोरियों की ड्रॉपआउट दर	27%	14%	UDISE+, 2020-21

तालिका में दिए गए आंकड़े यह संकेत देते हैं कि यदि शिक्षा और रोजगार को केंद्र में रखकर बनाई गई नीतियों को प्रभावशाली तरीके से लागू किया जाए, तो वे महिला सशक्तिकरण को मजबूत दिशा प्रदान कर सकती हैं। ऐसी नीतियाँ न केवल महिलाओं की सामाजिक स्थिति को बेहतर बनाती हैं, बल्कि उन्हें आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाने में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ', 'स्टैंड-अप इंडिया' और 'जनधन योजना' जैसी सरकारी पहलों ने महिलाओं की शिक्षा, वित्तीय समावेशन और उद्यमिता के क्षेत्र में महत्वपूर्ण प्रगति हासिल करने में मदद की है, जिसे तालिका में दिए गए आंकड़ों और केस स्टडीज़ के माध्यम से स्पष्ट रूप से समझा जा सकता है। इन नीतिगत प्रयासों ने महिलाओं की निर्णय लेने की क्षमता, घरेलू और सार्वजनिक जीवन में भागीदारी, और लैंगिक

समानता की दिशा में सकारात्मक परिवर्तन को गति प्रदान की है।

स्टैंड-अप इंडिया योजना (उत्तर प्रदेश में महिला उद्यमिता)

उत्तर प्रदेश में 'स्टैंड-अप इंडिया' योजना के अंतर्गत 2016-2023 के बीच कुल 1.1 लाख महिला उद्यमियों को ऋण प्रदान किया गया (स्रोत: SIDBI Annual Report, 2023)। योजना के माध्यम से महिलाओं ने रिटेल, फूड प्रोसेसिंग, टेक्सटाइल, और सेवा क्षेत्र में लघु उद्योग शुरू किए।

तालिका 4

वर्ष	ऋण प्राप्त महिला उद्यमी	औसत ऋण राशि)₹ लाख में(	कुल रोजगार सृजन
2016-17	12,560	₹9.8	48,300
2018-19	25,400	₹10.2	93,000
2022-23	45,980	₹10.7	1,62,000

जैसा कि तालिका में प्रदर्शित आंकड़ों से स्पष्ट होता है, स्टैंड-अप इंडिया योजना के अंतर्गत महिला उद्यमियों को दिए गए ऋण की संख्या में निरंतर वृद्धि हुई है। 2016-17 में जहाँ केवल 12,560 महिलाओं को औसतन ₹9.8 लाख का ऋण प्रदान किया गया, वहीं 2022-23 तक यह संख्या बढ़कर 45,980 हो गई, और औसत ऋण राशि ₹10.7 लाख हो गई। इससे यह संकेत मिलता है कि सरकार की ऋण नीतियाँ महिलाओं की वित्तीय पहुँच बढ़ाने में कारगर सिद्ध हुई हैं। इसी अवधि में कुल रोजगार सृजन 48,300 से बढ़कर 1,62,000 तक पहुँच गया, जो यह दर्शाता है कि महिला उद्यमिता न केवल आत्मनिर्भरता को बढ़ावा दे रही है, बल्कि देश की अर्थव्यवस्था में रोजगार सृजन के एक महत्वपूर्ण स्रोत के रूप में उभर रही है।

सफल महिला शिक्षित उद्यमियों या प्रोफेशनल्स के उदाहरण

नीति आधारित सहायता के परिणामस्वरूप देशभर में अनेक महिलाओं ने शिक्षा और व्यवसाय में अनुकरणीय उपलब्धियाँ प्राप्त की हैं। नीचे कुछ उदाहरण दिए गए हैं:

तालिका 5

नाम	स्थान	क्षेत्र	नीतिसहायता/ स्रोत	उपलब्धियाँ
सुधा मूर्ति	कर्नाटक	शिक्षा, लेखन, परोपकार	Infosys Foundation, सरकारी विद्यालय प्रकल्प	पुस्तकालय , ग्रामीण शिक्षा पर कार्य
कल्पना सरोज	महारा ष्ट्र	उद्योग कमानी) (ट्यूब्स	SC/ST फाइनेंस, बैंक ऋण सहायता	मलिन बस्तियों से उद्योगपति बनने की प्रेरणादायक कहानी
रानी कोरंगा	मध्य प्रदेश	कृषि एवं महिला मंडल	NRLM, महिला शक्ति केंद्र	आदिवासी समाज में महिलाओं के स्वरोजगार समूहों का गठन
फाल्गु नी नायर	मुंबई	डिजिटल ब्यूटी ब्रांड)Nykaa)	महिला स्टार्टअप प्रोत्साहन	₹29,000+ करोड़ की कंपनी की स्थापना

यह तालिका भारत की कुछ प्रमुख महिला उद्यमियों और उनके द्वारा विभिन्न क्षेत्रों में किए गए योगदान को प्रदर्शित करती है। प्रत्येक महिला ने सरकारी

नीतियों, सहायता योजनाओं और वित्तीय स्रोतों का लाभ उठाकर अपने व्यवसायों की स्थापना की और समाज में सकारात्मक बदलाव लाने में योगदान दिया। सुधा मूर्ति ने शिक्षा और परोपकार के क्षेत्र में अपनी पहल के माध्यम से ग्रामीण इलाकों में पुस्तकालयों की स्थापना की, जबकि कल्पना सरोज ने कमानी ट्यूब्स को उधारी और वित्तीय सहायता के माध्यम से सफलता की ऊँचाइयों तक पहुँचाया। रानी कोरंगा ने आदिवासी महिलाओं को स्वरोजगार के अवसर प्रदान कर उनकी सशक्तिकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, वहीं फाल्गुनी नायर Nykaa जैसे प्रमुख डिजिटल ब्रांड की स्थापना करके महिलाओं के लिए प्रेरणा का स्रोत बनी हैं।

उपसंहार

इस अध्ययन ने यह सिद्ध किया है कि महिला सशक्तिकरण में शिक्षा और रोजगार का गहरा संबंध है, और दोनों क्षेत्रों में नीतिगत हस्तक्षेप ने महिला स्थिति को सुदृढ़ किया है। शिक्षा ने महिलाओं को न केवल आत्मनिर्भर बनाया है, बल्कि उनके सामाजिक और राजनीतिक अधिकारों को भी मजबूती प्रदान की है। साथ ही, रोजगार के क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी बढ़ाने वाली नीतियाँ–जैसे ऋण सुविधा, उद्यमिता को प्रोत्साहित करने वाली योजनाएं और समान वेतन नीति–महिला कामगारों और उद्यमियों के लिए नए अवसर सृजित कर रही हैं। सरकारी योजनाओं और नीतियों ने महिलाओं को शिक्षा प्राप्ति में सहायता के साथ-साथ एक समर्थ कार्य वातावरण भी मुहैया कराया है, जिससे उनकी आर्थिक स्थिति में महत्वपूर्ण सुधार देखने को मिला है। महिला सशक्तिकरण के लिए इन नीति-निर्माण प्रयासों के चलते शिक्षा और रोजगार दोनों क्षेत्रों में व्यापक प्रगति हुई है। इससे महिलाओं की सामाजिक स्थिति में न सिर्फ सुधार हुआ है, बल्कि यह पूरे समाज की समृद्धि और विकास की दिशा में भी एक महत्वपूर्ण कदम साबित हुआ है। यह अध्ययन यह दर्शाता है कि शिक्षा और रोजगार के संयुक्त प्रयास महिलाओं के सशक्तिकरण को मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, और प्रभावी नीतियाँ इस प्रक्रिया की सफलता को सुनिश्चित करती हैं।

संदर्भ

[1] Jannah, N. (2020). Analyzing the role of education in women empowerment in Bangladesh. https://archives.kdischool.ac.kr/handle/11125/41422

[2] Jaysawal, N., & Saha, S. (2023). Role of education in women empowerment. International Journal of Applied Research, 9(4), 08-13. https://doi.org/10.22271/allresearch.2023.v9.i4a.10710

[3] Kamau, T. (2021). IMPACT OF EDUCATION AND EMPLOYMENT ON WOMEN EMPOWERMENT. Journal of Gender Related Studies, 2(1), 26-32.

[4] Nandesh, V. S. (2022). THE ROLE OF EDUCATION TOWARDS WOMEN EMPOWERMENT - A STUDY. International Journal of Multidisciplinary Educational Research, 017(9), 54-58. https://doi.org/http://ijmer.in.doi./2022/11.09.70

[5] Shrivastav, P. K. (2018). Role of Education in the Empowement of Women in India. 66(December), 37-39.

[6] कुमारीसारथी. (2019). महिला सशक्तिकरण में शिक्षा की भूमिका. International Journal of Advanced Academic Studies, 6(1), 6-14.

[7] शुक्लाडॉ. संकठा प्रसाद. (2019). महिला सशक्तिकरण की वर्तमान स्थिति: राजनीति सशक्तीकरण के परिपेक्ष्य में (उमरिया जिले के संदर्भ में). International Journal of Reviews and Research in Social Sciences, 7(1), 139-146.

द्वितीयक डेटा स्रोतों के संदर्भ

[1] Ministry of Panchayati Raj. (n.d.). Panchayat Raj statistics. Retrieved from https://www.panchayat.gov.in

[2] Ministry of Health & Family Welfare. (2023). National Family Health Survey (NFHS-5). Retrieved from https://www.mohfw.gov.in

[3] National Statistical Office. (2021). Periodic Labour Force Survey (PLFS) Annual Report 2020-21. Ministry of Statistics and Programme Implementation. Government of India.

[4] PMJDY. (2023). Pradhan Mantri Jan Dhan Yojana (PMJDY) Progress Report. Retrieved from https://pmjdy.gov.in

[5] National Family Health Survey (NFHS-5). (2021). India: Key Indicators. International Institute for Population Sciences (IIPS) & Ministry of Health & Family Welfare, Government of India.